भारत सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2020-2022

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 6 | अंक 19 | उदयपुर शुक्रवार 15 अक्टूबर 2021 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

मेवाड़ के स्वादिष्ट सूखे साग

सभी सब्जियां फलदायिनी यानी कई दृष्टियों से पोषक, स्वास्थ्यवर्धक, गुणकारी, प्रोटीन,केल्शियम, फास्फोरस, जिंक, लोहा युक्त तथा उच्च रक्तचाप, अल्सर, जिगर, सूजन, विटामिन, शुगर तथा कोलेस्ट्रौल जैसी बीमारियों के लिए उपयोगी हैं। सच तो यह है कि प्रकृति द्वारा प्रदत्त पूरा वनस्पतिजगत ही मनुष्य की हर तरह की आवश्यकता पूरी करने और उसकी हर तरह की बीमारी को दूर करने में सक्षम है। प्रकृति के सान्निध्य को पाकर उसके साथ समग्रतः आत्मस्थ होने वाला व्यक्ति न तो कभी बीमार होगा और न अल्पायु जीवी ही रहेगा।

सब्जी का स्वाद भोजन को शतगुणित कर देता है। कई बार अनुकूल सब्जी नहीं होने पर भोजन का मजा किरकिरा हुआ लगता है। ढाबों, होटलों पर भी सब्जी के स्वाद के कारण ही खाने वालों की भीड़ देखी जाती है। कहावत भी है, बत्तीस भोजन तैंतीस तरकारी यानी भोजन से भी तरकारी अर्थात् साग-सब्जी का ही महत्त्व अधिक आंका गया है। कठपुतली खेल में 'तरकारी ले लो मालनिया आई बीकानेर की' गीत राजस्थान में बड़ा लोकप्रिय है। इस गीत के पीछे बीकानेर की मालिन से जुड़ी कथा भी है।

भारतीय लोककला मण्डल, उदयपुर के कठपुतली दल ने भारतीय प्रतिनिधि के रूप में रूमानिया के तृतीय अन्तर्राष्ट्रीय कठपुतली समारोह में भाग लेकर परम्परागत पुतली प्रदर्शन का विश्व का सर्वोच्च पुरस्कार प्राप्त किया था तब भी मुगल दरबार नामक अमरसिंह राठौड़ के खेल में दरबारियों के सम्मुख मालिन नृत्य के इस गीत को दर्शकों ने अत्यधिक सराहा था।

कलामण्डल में नागोर जिले के जीजोट गांव के नाथू भाट को रखकर तब मेरे संयोजन में ही कईबार कई दिनों तक इस खेल के बारीक तंत्र का अध्ययन कर वहां के कलाकारों को प्रशिक्षित किया गया था और पहलीबार मैंने सम्पूर्ण कठपुतली खेल को लिपिबद्ध कर जगजाहिर किया था।

राजस्थान में सब्जी की जगह तरकारी नाम अधिक चलन में रहा। मारवाड़ चूंकि सूखा रेगिस्तानी भाग है इसलिए यहां हरी सब्जी की बजाय सूखी सब्जी का अधिक वापर है जो बारह मास चलता है। सूखा साग के नाम से यहां सागों की अनेक पैदावार है जिसमें अनेक व्यापारी लगे हुए हैं। सूखा साग यहां से थोकबंद बाहर निर्यात किया जाता है। इसमें बीकानेर सबसे अग्रणी है।

हरी सब्जी मौसमी होती है इसलिए जब इनकी पैदावार होती है तब उनको खाने के काम में ली जाती है किन्तु उसे सूखाने पर बारहों मास उसका उपयोग सम्भव रहता है। सभी हरी सब्जियां सूखाने पर खाने लायक नहीं होतीं तो कुछ ऐसी भी हैं जो कच्ची ही बनाकर खाई जाती हैं। करौंदा आदि ऐसी ही सब्जी है। सब्जी फलों की, फलियों की, छिलकों की, गुठली की तथा पत्तों की बनाई जाती है। कुछ फल ऐसे होते हैं जिनके प्रत्येक हिस्से की सब्जी बनाई जाती है।

इनमें आम सर्वोपरि है। आम का फल जब अत्यन्त छोटा आंवले के आकार का होता है तो गूंगणा कहलाता है। यह स्वाद में तूरा, कषाया होता है। बड़ा होने पर खट्टा होता है। अधपकने पर हाग कहलाता है। कच्चा पकास पर आने वाले का आचार डालते हैं। मेवाड़ में इसी आचार की सर्वाधिक खपत है। घर-घर, हर घर में इसका आचार डाला जाता है जो बारहों माह चलता है। आम के रस को आमरस कहते हैं। इसके साथ चावल और वीड़े (सवैयें) खाने पर बड़े स्वादिष्ट लगते हैं। आमरस को सूखाकर पापड़ बनाया जाता है।

आम की फांकें चीरें कहलाती हैं। इनकी भी सब्जी बनाई जाती है। इन्हें सूखाने पर अमोर्‌या बनाते हैं। बड़े खानों अर्थात् दावतों, प्रीतिभोजों में इनकी सब्जी अमचूर कहलाती है। झकोलमा पूड़ियों के साथ चने की दाल और अमचूर की संगत स्वाद को सोने में सुहागा कर देती है। इसके

अलावा आम का रसभरा गूठली-गूदा भी बड़ा रसीला होता है। कुछ आम ऐसे होते हैं जो चूसने के काम के ही होते हैं। उनका रस पतला होता है।

आम का गीला छिलका भी सब्जी के काम आता है और सूखाने पर भी सब्जी के लिए बेहतर होता है। यह फोंतरी कहलाता है। अमचूर की सब्जी के साथ सूखी खजूर, खारक, दाख तथा काजू जैसा मेवा और फोंतरी के साथ आचार का मसाला मिलाकर जो सब्जी बनाई जाती है वह बड़ी ही लाजवाब होती है।

रसविहीन गूदा-गूठली भी उपयोगी है। अच्छी सूखने पर छिलके सहित भोमर, गर्म राख में दबादी जाती है। उसके बाद ऊपर का छिलका जलाने के काम में लिया जाता है और भीतर की गूठली खाई जाती है। बिना सेकी गूदा-गूठली का कच्चा छिलका उतार भीतर से जो गूठली निकलती है उसके टुकड़े कर सूखाने पर सब्जी बनाई जाती है। इसमें भी अच्छा मसाला आचार देकर स्वादिष्ट सब्जी बनाई जाती है।

आम-फल की विविध सब्जी की तरह इमली-फल आमली की सब्जी नहीं बनाई जाती है। यह खटास देने का फल है। इसका फल फली की तरह लटकन लिये होता है। पकने पर इसका फल कूंगसा, कूंगा अलग कर छिलका सुरक्षित कर लिया जाता है। छिलके के छोटे-छोटे भाग सब्जी में डालने से उसे खटास देकर स्वाद बढ़ाया जाता है। आमली को पानी में घोल हाथ से मथकर हिंग-राई का वगार देकर जो पानी तैयार किया जाता है उसे आमलवाण्या कहते हैं। यह राब के साथ खाने पर राब का जायका द्विगुणित कर देता है। गर्मी में आमलवाण्या पीने पर बड़ी ठण्डक देता है।

कूंगस की चीबटें, दो फाड़ बनाकर बच्चे खेल खेलते हैं। कूंगसों की घूघरी भी बनाई जाती है। कूंगसों के अलावा मकई, ज्वार, गेहूं, कुरथ की घूघरी भी बनाई जाती है। विवाह के अवसर पर गेहूं की घूघरी-लपसी के छोटे-छोटे लेणों के रूप में घर-घर घूघरी बांटने की पूरी रस्म है जिसमें महिलाएं अच्छे वस्त्राभूषणों में सुसज्जित हो, घूघरी के विविध गीत गाकर यह रस्म पूरती हैं।

गूंदा छोटी सुपारी के आकार का रसदार फल चूसने के काम आता है पर इससे बड़े आकार के फल का छिलका सूखाकर सब्जी के काम में लिया जाता है। इसे बड़गूंदा कहते हैं और सब्जी बनने पर वरकणे की सब्जी के रूप में जाना जाता है।

कमल पानी में खिलता है। इसकी जड़ कीचड़ में होती है। इसका फल कमल कोंकरी नाम से जाना जाता है। इसकी नाल जाड़ी बनने पर कमलगट्टा कहलाती है। बेसन के साथ इसकी सब्जी बनती है जो बेसनगट्टा भी कही जाती है। कमलगट्टे के गोल-गोल टुकड़े सूखाने पर बनी सब्जी कमर्‌ये की सब्जी कही जाती है।

पत्तों की सब्जी में पालका, मेथी, चना, अरवी के हरे पत्तों की सब्जी बनाई जाती है। यह सब्जी भाजी कहलाती है। चने का झाड़ होता है। उसके पत्ते हल्की खटास देते हैं। पान के पत्तों की सब्जी नहीं बनती पर उसकी बेल के साथ परवल की बेल चलती है जिसके फल परवल की सब्जी बनाई जाती है। किसी समय मेरे गांव कानोड़ के पान बड़े प्रसिद्ध थे। दूर-दूर तक उनकी मांग रहती थी। इसका उल्टा पत्ता पान के रूप में खाया जाता है। पान की खेती पनवाड़ी में बेल के रूप में होती है। इसका पत्ता पाताल से लाया गया। इसके फल नहीं होता।

बेर छोटे आकार का फल होता है जो कंटीली झाड़ी पर लगता है। इसकी शक्ल का एक बड़ा फल पेमली बोर वृक्ष पर लगता है। इसके छिलके सूखाकर साग बनाई जाती है। आंवले का वृक्ष होता है जिस पर से लड़ालूम आंवले उतारे जाकर कच्चे और पक्के दोनों की सब्जी और आचार बनाया जाता है।

फली वाले फलों में चमले, उड़द, मूंग, मसूर, मटर की सब्जी बनाई जाती है। कोला वेलजनित बड़ा फल गिना जाता है। यह सबसे बड़ा फल कहा गया है। अन्य वेल फलों में काकड़ी, काचरी, डोचरा, खरबूजा, मतीरा मुख्य है। कोला को कद्दू भी कहते हैं। इसकी पतली पपड़ी सूख जाने पर कोचला कही जाती है। ग्वार की फली के साथ इसकी सब्जी फलीकोचला कही जाती है। ग्वार की पतली-पतली फलियां सूखाकर तेल में तली जाती हैं। मेहमानों के भोजन के साथ तला पापड़ और फली परोसी जाती है। टींडोरी टीनसी की हरी और सूखी सब्जी बनाई जाती है। उड़द, मूंग, मसूर, चंवले की दालें बनाकर जोलवाली और फीकी, बिना पानी की सब्जी तो बनती ही है पर चना, मूंग की अंकुरित सब्जी के कई गुण होते हैं। इन्हें अंकुरित बनाने के लिए दो दिन इन्हें पानी में भीगो दिया जाता है।

कैर, सांगरी, कुमटिया मुख्यतः रेगिस्तानी सब्जी है पर मेवाड़ में भी इसका खासा प्रचलन है। ऐसी पांच सब्जियों का मिलान पंचकूटा कहलाता है। कैर कांटेदार झाड़ी का फल है। सूखने पर यह गहरे भूरे रंग का हो जाता है। सांगरी खेजड़ी वृक्ष की फली है। अकाल के दिनों में तो इसकी छाल सूखाकर पीसा जाकर उस आटे की रोटियां बना खाई जाती थीं। यह राजस्थान का राजवृक्ष है। तरबूज, खरबूज की तरह काचरी डोचरा ककड़ी भी वेलफल है। इनकी चीरें बना सुखाई जाकर सब्जी बनाई जाती है। काचरी की तो चटनी तथा आचार भी बनाया जाता है। कुमटिया भूरे रंग की फलियों में पाया जाने वाला बीज है। इस वृक्ष से गोंद मिलता है जिससे लड्डू बनाये जाते हैं।

इनमें से सभी सब्जियां फलदायिनी यानी कई दृष्टियों से पोषक, स्वास्थ्यवर्धक, गुणकारी, प्रोटीन,केल्शियम, फास्फोरस, जिंक, लोहा युक्त तथा उच्च रक्तचाप, अल्सर, जिगर, सूजन, विटामिन, शुगर तथा कोलेस्ट्रौल जैसी बीमारियों के लिए उपयोगी हैं। दवाइयों में इनका कई तरह से उपयोग किया जाता है। जड़ीबूंटियां से इलाज करने वाले गुणीजन इनके लाभों से सुपरिचित हैं। आदिवासियों में तो इनकी सूक्ष्म पहचान मिलती है। वे तो सभी तरह का इलाज जड़ीबूंटियों से ही करते हैं।

सच तो यह है कि प्रकृति द्वारा प्रदत्त पूरा वनस्पतिजगत ही मनुष्य की हर तरह की आवश्यकता पूरी करने और उसकी हर तरह की बीमारी को दूर करने में सक्षम है। उसके स्वास्थ्य को बनाये रखने तथा दीर्घायु के लिए इनका उपयोग प्रयोग जानकार ही कर सकते हैं। प्रकृति के सान्निध्य को पाकर उसके साथ समग्रतः आत्मस्थ होने वाला व्यक्ति न तो कभी बीमार होगा और न अल्पायु जीवी ही रहेगा। **-म. भा.**

पोथीखाना

'मड़ई' के बहाने लोक का रेखांकन

लोकसाहित्य को हमारे यहां साहित्य के समकक्ष बराबरी का दर्जा नहीं दिया। शैक्षणिक दृष्टि से विश्वविद्यालयों ने भी इसे महत्त्वपूर्ण नहीं माना। इसीलिए विद्वानों ने लोक को सम्मान नहीं देकर पिछड़ा ही माना लेकिन आजादी के बाद कुछ व्यक्ति और संस्थाओं का ध्यान इस ओर गया और उन्होंने इसे मूल्यवान समझ इसके संग्रह और संरक्षण के साथ-साथ उन्नयन विकास तथा प्रकाशन का दायित्व लिया। ऐसी पत्रिकाओं का प्रकाशन भी प्रारम्भ हुआ।

उन पत्रिकाओं में लोककलाओं के लिए ख्यातलब्ध भारतीय लोककला मण्डल द्वारा प्रकाशित 'लोककला' तथा 'रंगायन' का नाम प्रमुखत: लिया जा सकता है।

राजस्थान से ही बोरूंदा से प्रकाशित लोककथाओं की वीणा और फिर इसी का बदला नाम लोकसंस्कृति तथा जोधपुर से डॉ. रामप्रकाश दाधीच द्वारा त्रैमासिक लोकसाहित्य; अब ये सभी स्मरणीय नाम हैं। हां भोपाल से 1983 में चातुर्मासिक चौमासा प्रारम्भ हुआ जिसका प्रकाशन अभी भी चालू है।

इन सबसे जुदा गत 33 वर्षों से छत्तीसगढ़ के बिलासपुर से वार्षिकी के रूप में उल्लेखनीय 'मड़ई' का जिक्र विशेष उल्लेखनीय है। रावत नाच समिति के सद्प्रयासों से डॉ. कालीचरण यादव के प्रज्ञावान सम्पादन में लोक के रेखांकन का यह विनम्र प्रयास हम सबका ध्यान केन्द्रित किये है।

इसके प्रमुख कारणों में एक तो यह पत्रिका पूर्णत: नि:शुल्क वितरण के लिए है। और तो और इसे प्राप्त करने के लिए डाक टिकिट भेजने तक की आवश्यकता नहीं है। फिर पत्रिका लोकसंस्कृति पर केन्द्रित चिन्तनपरक, गंभीर, मौलिक तथा शोधपूर्ण अप्रकाशित लेखों के अलावा विभिन्न अंचलों की लोकसंस्कृति के रेखांकन के लिए प्रतिबद्ध है। लोकसाहित्य के प्रति रूचि रखने वाले लेखक-पाठक चाहें तो 'मड़ई' प्राप्त करने अपने पते और फोन नम्बर भेज सकते हैं।

मैंने डॉ. कालीचरणजी को लोकसंस्कृति के प्रति ऐसी एकनिष्ठ साधना, अर्पण-समर्पण एवं गहन आस्था के लिए बधाई देते कहा कि पूरे देश में ऐसी यह एक अकेली पत्रिका है जो देशव्यापी लोकसंस्कृतिवेत्ताओं, विचारकों तथा विद्वानों की हमसफर बनी हुई है।

याद पड़ता है, भारतीय लोककला मण्डल के माध्यम से सन् 1958 में हमने पहलीबार अखिल राजस्थान लोककलाकारों के चार प्रशिक्षण शिविर आयोजित किये जिसमें रात-रात भर ख्याल-तमाशे करने वाले, स्वांग भरने वाले, रासधारी-रामलीला करने वाले, जुलूस तथा सवारी के माध्यम से सशक्त लोकानुरंजन करने वाले कलाकारों ने समा बांधा था। इसी में नागौर जिले का एक नाथू भाट का अमरसिंह राठौड़ का कठपुतली नचाने वाला दल आया था जो आस्थामूलक विश्वासी के रूप में इस विरासत को अंतिम उजाला दे रहा था।

हमने इसी की नकल पर 'मुगल दरबार' खेल की नव्य-भव्य रचना कर अपने कलाकारों से कठपुतली खेल को पुनर्जीवित करने का बीड़ा उठाया जिसका सुपरिणाम यह रहा कि 1965 में बुखारेस्ट के रूमानिया में हुए तृतीय अन्तर्राष्ट्रीय कठपुतली समारोह में मात्र चार सदस्यीय कलाकारों द्वारा भारतीय प्रतिनिधित्व का सुखद संयोग निभाते विश्व का प्रथम पुरस्कार अर्जित किया। कहना नहीं होगा कि उस एक ही रात में पूरे विश्व में भारतीय-राजस्थानी कठपुतलियां सबकी आंखों का सितारा बन गईं।

उसी दौरान हमने पहलीबार कठपुतली समारोह, लोकानुरंजन मेला, लोककला संगोष्ठी, लोकनृत्य तथा लोकनाट्य समारोह आयोजित करने की परम्परा ही प्रारम्भ कर दी। ऐसे करते-करते पूरे देश और विश्व में भी लोककला-संस्कृति के प्रति लोगों के मनमानस में जमीनी दिलचस्पी प्रारम्भ हो गई। इसके लिए मैंने पूरे राजस्थान और निकटस्थ राज्यों का दौरा कर वहां की लोकसांस्कृतिक विरासत के वैभव को अपनी दृष्टि से हृदयंगम किया और अनेक विधाओं पर जमकर लिखा।

राजस्थान में प्रचलित भवाई, रावल, रासधारी, तुर्राकलंगी, तमाशा, स्वांग, भड़ैती, लीलारूप, पड़, कावड़ तथा अन्य अनेक विधाओं यथा आदिवासियों में प्रचलित हस्तशिल्पों, नृत्य-नाट्यों, अनुष्ठानों, तंत्र-मंत्रों, सुगरों-नुगरों, लोकदेवी-देवताओं और मीरां, प्रताप, हल्दीघाटी, पद्मावती जैसी विभूतियों तथा दृश्य-अदृश्य शक्तियों तक की थाह लेते शताधिक ग्रंथों की रचना की। पहलीबार जब उदयपुर के मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय का 1968 में दीक्षांत समारोह हुआ तब मात्र 5 छात्रों के बीच मैं भी पीएच. डी. की उपाधि लेने वाले गौरवों में एक था।

'मड़ई' का नाम भी उन्हीं दिनों मेवाड़ में रासधारी ख्याल देखते एक पद में सुना। यह रासधारी आख्यान कृष्णलीला से सम्बन्धित नहीं होकर राम-सीता के जीवन-प्रसंग से जुड़ा हुआ है। इसमें वनवास के दौरान पंचवटी में राम अपने रहने के लिए मड़ई बना रहे हैं। मड़ई बनाकर राम उसमें निवास कर रहे हैं। वादक मिल गाते हैं-

जाय हरि बन में तो कुटिया बनाई
कुटिया बनाई हर ने कुटिया बनाई।। टेर।।
भोजपतर की बणी मंडइया चंदन बली लगाई।
हरी-हरी बाड़ी बोय दई तब मिरगा री बण आई।।

इस रासधारी ख्याल में अनेक पद ऐसे हैं जिनमें रचयिता के नाम की छाप तुलसी के नाम की है। 'मेवाड़ के रासधारी' नाम से मेरी पुस्तक भारतीय लोककला मण्डल से 1970 में प्रकाशित हुई। लोक में ऐसी परम्परा सदा से चली आई है। अनेक रचनाओं, पदों, गाथाओं और भजनों में कबीर, चन्द्रसखी तथा भीख मांगने वाले मंगतों, मांगणियारों के नाम मिलते हैं। मीरां का नाम लिये तो राजस्थान में ही नहीं, अनेक प्रान्तों की बोलियों, वाणियों में सैकड़ों पद सुनने को मिलते हैं।

यह सुखद अचरज ही है कि आज तो देश का शायद ही कोई विश्वविद्यालय ऐसा होगा जहां लोककला, लोकसाहित्य, लोकसंस्कृति पर कोई शोधार्थी शोधानुसंधान में नहीं लगा हो। देश के ही नहीं, विदेश के भी कई अनुसंधित्सु प्रतिवर्ष ही मुझसे मिलते हैं जो तल्लीनता एवं तसल्लीपूर्वक यहां की सांस्कृतिक धरोहर के प्रति विशेष दिलचस्पी रखते हैं।

'मड़ई' का 19वां अंक भी अपनी उसी परम्परा की ठाठदार ठसक लिये है। कुल 32 रचनाधर्मियों ने मिलकर जैसे विविध प्रान्तों की लोकसंस्कारित सुरणाई का शतरंगी धनक ही धनुषित कर लोकमुख-आमुख की बत्तीसी ही जड़ दी है। इनमें से कुछ रचनाओं का जिक्र यहां मैं अपेक्षित समझ रहा हूं। 'लोक की अनूठी बोली-बानी' में राकेश भारतीय ने बड़े गहरे गोते लगाकर लोक की सांगीति को अनदेखी करने वाले विज्ञों पर चुटकी लेते ठीक ही लिखा- 'कई बार तो लोक सहजता की कसौटी पर ऐसे शब्द गढ़ कर निकालता है कि बड़े-से-बड़े भाषाशास्त्री भी चकित रह जाते हैं।' (पृ. 37)

'लोक उद्गम-वुद्गम के पचड़े में कभी पड़ता नहीं, बस प्रयोग में उन्हें पीढ़ियों से लेता चला आ रहा है जो साहित्यकार जमीन से जुड़े होते हैं, जमीन से जुड़ी हुई रचना देते हैं। वे लोक की बोली-बानी की ताकत बखूबी समझते हैं।' (पृ. 39)

नर्मदाप्रसाद उपाध्याय तो लोक के ही आलोक हैं। 'भारतीय चित्रांकन में लोक' के बहाने उन्होंने लोक की रचना प्रक्रिया का उत्स खंखेरते हुए प्रारम्भ में ही लोक और शास्त्र की कसमकश करने वालों की आंखें खोलते अपना सटीक चिन्तन ही जैसे दस्तावेजीकरण के रूप में परोस दिया।

वे लिखते हैं- 'निरन्तर रूपांतरण होते रहना संवेदना की विवशता होती है और इस रूपांतरण की जीवनशक्ति इतनी समर्थ होती है कि वह विभिन्न अभिव्यक्तियों में परिवर्तित हो जाती है। स्रोत एक ही होता है लेकिन स्रोतस्विनी के स्वरूप बदल जाते हैं। धरातल एक ही होता है लेकिन अभिप्रायों की भंगिमाएं परिवर्तित हो जाती हैं।

आंखों का युगल एक होता है पर दृष्टियां भिन्न हो जाती हैं। यही समर्थ मानवीय संवेदना उस लोक की रचना करती है जो लोक हमें जीवनमूल्य देता है और यही संवेदना उन शास्त्रों को भी रचती है जिनमें भारतीयता के स्वरूप को भी रचा गया है तथा यही संवेदना उस कला की जननी है जिसका बल अपनी नवीनता को सदैव बनाए रखने का है।' (पृ. 29)

लोक की अस्मिता और शाश्वतता को रेखांकित करते उपाध्यायजी मक्कड़जाल नहीं बुनते। शतरंज के खिलाड़ी की तरह वे अपना स्वतंत्र मत स्पष्ट करते जोर देते कहते हैं, 'भारत में लोक से पृथक अस्मिता रखकर अपना अस्तित्व रचने वाली ऐसी कोई शिल्पांकन, स्थापत्य अथवा चित्रांकन की परम्परा नहीं रही जिसमें केवल अभिजात ही व्यक्त हुआ हो और लोक छूट गया हो। चौंकाने वाला तथ्य यह है कि राजदरबारों में पल्लवित होने वाली चित्रकला की रचना करने वाला चितरों का एक अलग ही वर्ग था जो किसी राज्याश्रय में पला-बढ़ा नहीं था तथा जो अपने अंकनों में अपने लोक को चित्रित करता था।' (पृ. 31)

'चौकबन्दी गुरु-शिष्य की अनोखी परम्परा' में शम्भूशरण सत्यार्थी ने बिहार के गांवों की बाल-काल की शैक्षणिक पद्धति के बहाने भादो मास की चतुर्थी को गुरु-शिष्य की समूहबद्ध घर-घर जाकर चौकबन्दी गान की याद दिलाते उसका बड़ा ही मनभावना चित्र प्रस्तुत किया है। उसे पढ़ मुझे मेरे बचपन की पाठशाला में अध्ययन करते लकड़ी के दो छोटे-छोटे बड़े ही कलात्मक डंके बजाते अपने माड़साब (गुरुजी) के साथ घर-घर जाकर 'चौकच्याणी भादूड़ो, लाइदो भाई लाडूलो' गान करने का प्रसंग याद आ जाता है। यह भादवी चतुर्थी को आयोजित होता जो चौक चांदणी के नाम से जाना जाता है।'

'कजरी खेल-स्त्रियों का निजी क्षेत्र' में डॉ. क्षमाशंकर पांडेय ने बड़ा ही सूक्ष्म पर्यालोचन करते लिखा- ' इसके माध्यम से वर्जनाओं को ठेंगा दिखाते उन्मुक्त अभिव्यक्ति के साथ स्वच्छंदता और एकांत की आवश्यकता होती है। दमित इच्छाएं जो घर की सीमा और अनुशासन में दबी रहती हैं, घरों में बंद स्त्रियों को कजरी के चौघट्टे तक ले आती हैं।

इसमें खेले जाने वाले लघुनाट्य सीमित संसाधनों, सीमित वेशभूषा और सज्जा तथा बगैर किसी मंच के खेले जाते हैं। इनकी विषयवस्तु स्त्रियों के अपने दु:ख-दर्द और आसपास के अनुभवों पर आधारित होती है।' (पृ. 141)

ठीक इसी तरह का स्त्री-रंजन राजस्थान में प्रचलित रहा और गांवों में तो अभी भी है। विवाहोत्सव में जब वर की बारात चली जाती है तब पीछे घर में रहने वाली महिलाएं रात्रिभर समूह रूप में विविध प्रहसनों तथा गीत-गालों के साथ जो स्वांग भरती हैं उनमें कई द्विअर्थी, कुछ बड़े ही कलात्मक तो कुछ शुद्ध अश्लीलपरक होते हैं।

इन्हें किसी पुरुष तथा समझू बच्चों तक को देखना पूर्णत: वर्जित रहता है। मैंने अपने बालपन में ऐसे प्रहसनी खेल-तमाशे देखे ही नहीं, बखूबी लिपिबद्ध भी किये हैं। उनका बाद में 'चौमासा' में प्रकाशन भी हुआ जो लगभग 50 से भी अधिक हैं।

इन्हें 'ख्याल झामटड़ा' नाम से संबोधित किया जाता है। अन्य हिन्दी प्रदेशों में भी इनका प्रचलन है। वहां ये टूंटिया, टूंटकी, खोड़िया जैसे नाम लिये हैं। इन्हें देखने से ही नहीं, अन्य जितने भी महत्त्वपूर्ण प्रसंग-संस्कार तथा त्यौहार-उत्सव-अनुष्ठान हैं उनमें भी महिला समुदाय की सक्रिय भागीदारी ही प्रमुखत: देखने को मिलती है। इसीलिए मैंने तो महिला समुदाय को समस्त कलाओं की जननी कहा है। पहलीबार जब मैंने मेहंदी, माण्डणों, थापों, सांझी तथा होली, गणगौर और कार्तिक स्नान पर कही जाने वाली कथाओं पर लिखा तो अन्यत्र भी इन विधाओं पर लिखने वाले आगे आये और पीएच. डी. की उपाधियां तक प्राप्त कीं।

हरिराम मीणा लिखित 'आदिवासी लोक की विशिष्ट सांस्कृतिक प्रथा-परम्पराएं', डॉ. आद्याप्रसाद द्विवेदी लिखित 'यक्ष-पूजा परम्परा' तथा डॉ. ओमप्रकाश पांडेय का 'बंगाल के प्रमुख लोकनृत्य' जैसे लेख शोधानुसंधान के अच्छे विषय हैं। पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र ने राजस्थान, गुजरात तथा महाराष्ट्र के लोकनृत्यों पर मेरे से जुदा-जुदा पुस्तकें लिखवाई तो देवस्थान विभाग ने राजस्थान के लोकदेवी-देवता पर प्रकाशन देकर अपनी दैनन्दिनी गतिविधियों के साथ प्रकाशन क्षेत्र द्वारा विशिष्ट पहचान प्रारम्भ की। यही नहीं, उदयपुर के आदिवासी शोध संस्थान (आईआरआई) की ओर से भी मेरी गरासिया, भील तथा अन्य जनजातियों पर पोथियां छपीं।

इस दृष्टि से 'मड़ई' का प्रत्येक अंक ही मुझे कुछ-न-कुछ नई, बड़ी उपयोगी और खोज की ऐसी पगडंडियां देता मिलता है कि काम करने का एक विशाल क्षेत्र ही खुल पड़ता है। एक अंग्रेजी कविता की छठी कक्षा में पढ़ी ये पंक्तियां मेरे लिए आज भी प्रेरणा का स्रोत बनी हुई हैं-

लिटिल ड्रोप्स ऑफ वाटर लिटिल ग्रेन्स ऑफ सेण्ड।
मेक द माइटी ओसन एण्ड द प्लीजेंट लेण्ड।।

'मड़ई' ऐसी ही मड़ई बनी रहकर जमीनी हरकत से हमें जोड़ी रखे और काली-चरण की साक्षी में हम जैसे लोक के अतल-पतल की सैर करते रहें।

-म. भा.

स्मृतियों के शिखर (130) : डॉ. महेन्द्र भानावत

नरू से निनामा होते 108 गोत्रों में फला आदिवासी समाज

अन्य सभी लोकों में आदिवासी लोक अलग है- वाचिक परंपरा में, सुर-लय में, जीवनधर्मिता में, आस्था-विश्वास में और मान्यता-मनौती में, संस्कार, सौहार्द तथा नानाविध सरोकारों में, मन-मस्तिष्क की चिंतना में, पूर्वजन्म-पुनर्जन्म की अवधारणा में, धर्म-अध्यात्म से जुड़े अनुष्ठान में, प्रकृति की सहजता में, रहस्यों के घेरे में, मन बहलाव में और ऐसे ही अनेकानेक लोकसंदर्भित विचार-व्यवहार, जल-जंगल तथा जड़ चेतन में।

खोज की पगडंडियां कितना नाप पाती हैं- ज्यों-ज्यों बूड़ै श्याम रंग, त्यों-त्यों उज्ज्वल होय। जैसे एक परमेश्वर अनेक के हो सकते हैं वैसे ही आदिवासियों में जो कुछ मिलता है, उसका रूप-प्रतिरूप-स्वरूप अन्यत्र भी, अन्य वासियों में भी छाया-प्रतिछायावत चलन-प्रचलन में है, हो सकता है। किससे किसने कैसे कब कितना ग्रहण किया, कहना मुश्किल है।

किसी छापरड़े, अन उपजाऊ वीरान क्षेत्र में चलते पथिक को कोई वेरा-वेरी, बरसाती छोटा नाला-नाली मिल जाय और उसके रेतीले किनारे खबड़ी खोद कर, हाथ-आधा हाथ रेती इधर-उधर कर तनिक गहराई में से ही खुणच्ये-खुणच्ये, दोनों हाथों की हथेलियां मिला पानी निकाल अपनी प्यास बुझाकर तृप्त होने का सुख मिलता है उसी प्रकार मैंने विगत अर्द्धशताब्दी के दौरान अपने यात्रा-प्रवास में अनेक लोगों से भेंटकर सार्थकरूपेण जो विविध सामग्री एकत्र की उसका संग्रह ही बड़ा अद्‌भुत है।

यों भी हमारा देश बहुवाची, बहुवचनिक है। अनेक जातियां, अनेक सम्प्रदाय, अनेक वर्ग, अनेक वर्ण, अनेक सभ्यता, अनेक संस्कृति और अनेक समूह, जीवनधर्म, अध्यात्म तथा सत्कर्म। इन सबका सबरंग, सबरूप एक नहीं हो सकता लेकिन सबको बांधने वाली आत्मीयता तथा अंतरंगता अपने संवेदन में एकसूत्र बंधी है।

आजादी के बाद भारत की लोकतांत्रिक पहचान आदिवासियों, वंचितों तथा आखिरी पायदान पर खड़े आदमी तक पहुंची है पर हुआ क्या? उस लोकतांत्रिक सत्ता ने उनका कितना विकास किया? जो सर्वेक्षण, अध्ययन, अनुसंधान अब तक हुए हैं वे तो नकारात्मक प्रभाव ही अधिक बता रहे हैं। कई बार ऐसा लगा कि उनके लिए नियम, कानून तथा योजनाएं बनाते समय उनकी जीवन दृष्टि, उनकी परिस्थिति-परिवेश तथा उनकी चाह-चिंता का कोई ध्यान नहीं रखा गया।

आदिवासी जीवनधारा का कोई लिखित शास्त्र नहीं है। उसका बहुत सा हिस्सा अलिखित है। हर चीज लिखित से नहीं चलती। लिखित कानून होता है पर हर चीज कानून से भी नहीं चलती। आदिवासी समाज अपने ढंग से, अपने रंग में जीने वाला समाज है। जितने भी प्राचीन समुदाय हैं वे अपनी परम्परा से जीने के विश्वासी हैं। समूह में जीने के अभ्यासी हैं। वहां कानून और नियम कायदों की जरूरत क्यों हो? हो तो कैसी हो? यह विचारणीय है।

आदिवासियों में सामूहिक जीवन जीने की प्रधानता अब समाप्त होती जा रही है। तब गलती के लिए जो कानून और दंड विधान था वह सामूहिकता लिए था। भील समाज में प्रचलित मौताणा प्रथा को ही लें। अब उसका स्वरूप बड़ा भयंकर बनता दिखाई दे रहा है।

प्रख्यात समाज विज्ञानी प्रो. ब्रजराज चौहान से हुई बातचीत में उन्होंने मुझे बताया, 'मौताणा आधुनिक हिसाब से क्राइम है, अपराध है। आदिवासियों ने जिसे सिविल माना, हमने उसे क्राइम मान लिया। सिविल रूप में मौताणा समस्या है, क्राइम नहीं। जो हानि हुई है, क्षतिपूर्ति द्वारा वह संभव है। मौताणा में समझौता है। जिस किसी की गलती की क्षतिपूर्ति संभव हो, उस समाज को पिछड़ा कैसे कहेंगे? वह तो अधिक विकसित समाज है।'

आदिवासियों के सामूहिक अनुभूति-स्वर से गंगा सहाय मीणा भी उतने ही सहमत हैं। उनका यह कथन ध्यान देने योग्य है, 'आदिवासी जीवन से लेकर आदिवासी साहित्य तक में शास्त्रों और सिद्धांतों के लिए कोई जगह नहीं है। उनके समाज में साहित्य अन्य कला-माध्यमों से अलग और श्रेष्ठ नहीं माना जाता। उनकी लम्बी परंपरा में सामूहिकता का बोध ही सर्वोपरि है। उनमें मौजूद मौखिक साहित्य या पुरखौती में कौनसा-कौनसा गीत, नृत्य किंवा संगीत किसने रचा, बताना मुश्किल है। सभी रचनाएं सामूहिक रूप से हुई हैं।

उनकी दृष्टि में आदिवासी पूर्णत: प्रकृति पुरूष हैं। उनके दर्शन में प्रकृति और पुरखों के प्रति आभार का भाव निहित है। पुरखों के कला-कौशल, ज्ञान-विज्ञान और इंसानी बेहतरी के अनुभवों के प्रति आदिवासी रचनाकार कृतज्ञता व्यक्त करता है। उनका दर्शन परलोक के बजाय समूचे जीव जगत को महत्वपूर्ण मानता है तथा मनुष्य की श्रेष्ठता के दंभी दावे को खारिज करता है। यह समाज खुद को तमाम नदियों, पहाड़ों तथा जंगलों का संरक्षक मानता है और उन्हें बचाना अपना कर्तव्य समझता है।

ऐसे सहजीवन, सहभागिता, सहअस्तित्व तथा समता-सुखजीवी आदिवासी समाज का अध्ययन समग्रत: उनकी मातृभाषी परंपराओं में सुरक्षित है इसलिए उनके जीवन जगत और विश्व-विशाल दृष्टिकोण को समझने के लिए भी उन्हीं की मातृभाषाओं तक पहुंचना होगा।'

-(जनसत्ता, 6 जुलाई 2014)

भविष्य पुराण का श्लोक भी यही कह रहा है-

दश कूप समा वापी, दश वापी समो ह्रद:।
दश ह्रद सम: पुत्रो, दश पुत्र समो द्रुम:।।

अर्थात् दश कुओं के बराबर एक बावड़ी, दस बावड़ियों के बराबर एक तालाब, दस तालाबों के बराबर एक पुत्र और दस पुत्रों के बराबर एक वृक्ष। जल, जंगल और जीवन तीनों का अस्तित्व अन्योन्याश्रित है।

मैने भी लिखा था-

वृक्ष कटता है जैसे परिवार कटता है
अपनी ऊंगली तो काटकर देखो तुम
कितनों का सहारा होता है वृक्ष
कितनों का घरबार, जीवन और
संसार होता है वृक्ष
तुम्हें क्या मालूम।

-(कोई-कोई औरत, पृष्ठ 15)

उदयपुर में 50 वर्ष पहले मैं जिस बस्ती कृष्णपुरा में रहने आया, उसमें सभी जातियों के निवासी थे। इसलिए मैं यह देख सका कि एक ही त्यौहार, उत्सव, संस्कार, अनुष्ठान को अलग-अलग लोग किस-किस अंदाज में मनाते हैं। फिर उन्हीं चीजों को, उन्हीं जातियों में गांवों में जाकर देखा। अलग-अलग जातियों में भी उनके कुछ आधे, कुछ अधूरे, कुछ मिटते, कुछ सिकुड़ते तो कुछ फैलते रूप देखे।

जाने-अनजाने में भी एक-दूसरे ने एक-दूसरे का प्रभाव ग्रहण किया। उस प्रभाव पर अपनेपन की, समाज की, अंचल विशेष की छाप भी लगी दिखाई दी। फिर परिवार में जो बालिका वधू बनकर आई या वधू बनकर गई, वह भी बहुत कुछ संस्कार-संस्कृतिगत सौजन्य अपने साथ लाई-लेगई। सूक्ष्म अध्ययन करने पर कुछ प्रभाव का तो पता लगता है किंतु बहुत सी बातों का प्रभाव दिखाई नहीं देता, मात्र महसूस होता है, कभी-कभी नहीं भी होता है।

आदिवासियों की जीवनधारा, समस्याएं एवं चुनौतियों को लेकर बड़ी-बड़ी जगह, बड़े-बड़े तामजाम और बड़े-बड़े ज्ञानीजनों के साथ बड़े-बड़े सेमीनार, बड़ी-बड़ी संगोष्ठियां, बड़ी-बड़ी कार्यशालाएं तथा बड़ी-बड़ी प्रदर्शनियों का आयोजन होता है। मैं इनका साक्षी रहा। वहां सब कुछ होता है परन्तु जिन्हें प्राथमिकता से होना होता है, वे आदिवासी नहीं होते।

वहां विचार करनेवाले तो होते हैं मगर कुछ करनेवाले नहीं होते। सुझाव देने वाले तो होते हैं मगर साझा करनेवाले नहीं होते। कहते हैं, दीवालों के कान होते हैं तो वहां दीवालें अवश्य सुनती होंगी किंतु जिनसे सुनना, सुनकर समझना, समझकर चिंतन करना तथा चिंतन कर समस्या का स्थायी निष्कर्ष-निदान करने वाला नहीं होता।

आदिवासियों की एक हस्तकला प्रदर्शनीपरान्त वैचारिक वीथिका में मैंने कहा कि उनके द्वारा निर्मित कुछ ही चीजों का यदि आकर्षक स्वरूप निखारा जाय तो उनका बाजार बन सकता है। खासतौर से उदयपुर क्षेत्र में, आदिवासी अपने गवरी नृत्य में नायक राई बुढ़िया जो मुखौटा धारण करता है उसका सरलीकृत रूप तलाशा जाना होगा।

ऐसे प्रयोग हमने राजस्थान की पड़ कला, कावड़ कला, कठपुतली कला में उनसे जुड़े चितेरों-कलाकारों से करवाये हैं फलस्वरूप इन मृतप्राय कलारूपों का पुनर्नवीकरण हुआ और वे कलाकार आर्थिक दृष्टि से भी सबल बने हुए हैं।

वहीं बैठे समाजशास्त्र के एक प्रोफेसर ने बिना सोचे-समझे सुझाव दे डाला कि क्या ही अच्छा हो, राई बुढ़िये के मुखौटे की बजाय ओबामा और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मुखौटे बनाये जाय ताकि उनकी बिक्री से असीम धन-राशि प्राप्त की जा सके। मैंने तत्काल उनके इस कथन से असहमति जाहिर की और कहा कि तब क्या उन मुखौटों में आदिवासी समाज के आदिमपन की सांस्कृतिक एवं कलात्मक गंध रह पायेगी?

यहीं मुझे वह संगोष्ठी याद आ गई जिसे 8 अक्टूबर 1972 को मैंने भारतीय लोककला मंडल में आयोजित की थी। इसका विषय था- 'लोककलाओं का पुनरूद्धार और भावी संभावनाएं।' श्री जगदीशचन्द्र माथुर की अध्यक्षता में हुई इस संगोष्ठी में सर्वश्री देवीलाल सामर, कोमल कोठारी, विजय वर्मा, डॉ. नरेन्द्र भानावत, मालती शर्मा, पुष्कर चन्दरवाकर आदि की महत्त्वपूर्ण भागीदारी रही।

लोककलाएं : पुनरूद्धार की प्रक्रिया शीर्षक अपने परचे में मैंने जो प्रश्न उठाये, उनका उल्लेख करते हुए अपनी 51 पृष्ठीय भूमिका में लेखक डॉ. सत्येन्द्र ने लिखा, 'लोककला भ्रष्ट हो रही है, उसमें विकार आ रहा है, साथ ही उसका व्यावसायीकरण और शहरीकरण हो रहा है। यह भी कि जिन संरक्षकों और पोषकों में लोककला समाहित थी, उसमें परिवर्तन हो रहा है। इन बातों को दृष्टि में रखकर ही डॉ. महेन्द्र भानावत ने ये प्रश्न खड़े किए हैं। खड़े नहीं किए उन्होंने, पर उन्हें परिस्थितियों और परिवेश में ये प्रश्न खड़े होते दिखते हैं। उनके प्रश्न ये हैं-

(1) आज की बदलती हुई जीवन-व्यवस्था में इन कलाओं का क्या रूप हो?
(2) क्या ये कलाएं अपने पारंपरिक परिवेश में ही जीवित रह सकती हैं?
(3) और यदि इनमें परिवर्तन-परिवर्धन हो तो वह किस सीमा तक हो?
(4) यह परिवर्तन-परिवर्धन कलाकार स्वयं करे या कोई अन्य दृष्टिवान कला-पुरूष?
(5) और क्या यह परिवर्तन ऐसा नहीं लगेगा जैसे थोपा हुआ हो?
(6) क्या दर्शक और प्रदर्शक का एक मन उसे आंख मींचकर स्वीकार कर लेगा?'

-लोककला: मूल्य और संदर्भ, भूमिका, डॉ. सत्येन्द्र, पृ. 46

आदिवासियों की उत्पत्ति के संबंध में विद्वानों ने कई तरह की अटकलें लगाईं और मनगढ़ंत बातें लिखी हैं। अपनी खोज-यात्राओं में उदयपुर के निकट बड़ी ऊंदरी के उदा पारगी ने आदिवासियों के उद्‌भव संबंधी रोचक एवं विस्मयभरी जानकारी दी।

सौ से अधिक वर्ष की उम्र होने के कारण मुझे उनकी स्मरण शक्ति कुछ शिथिल होती लगी किंतु उन्होंने जो सूत्र मुझे दिये उनके आधार पर जब हल्दीघाटी रणक्षेत्र की रक्ततलाई में लोकदेवता वीरवर कल्लाजी राठौड़ की ज्ञान-गादी लगी तब उनके सेवक सरजुदासजी के भाव-दर्शन द्वारा जो विस्तृत जानकारी उपलब्ध हुई उससे उदा पारगी की बात पर संदेह की कोई गुंजाइश नहीं रही अपितु उस बात का विस्तारपूर्वक खुलासा भी मिल गया और प्रामाणिकता पर भी मुहर लग गई।

उदा पारगी से मेरी भेंट 2 जून 2002 को उनके निवास पर हुई जबकि इसी वर्ष 24 अक्टूबर को रक्ततलाई में लगी गादी पर बहुत सारे सवालों में मुख्यत: महाराणा प्रताप द्वारा किए गए हल्दीघाटी युद्ध के संबंध में कई नवीन और चौंकानेवाले तथ्य हाथ लगे। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि लगभग 50 वर्ष पूर्व जब मैं पहलीबार आदिवासियों के बीच गया तो उन्होंने अपनेआप को आदिवासी ही कहा न कि भील, मीणा, गमेती या कोई और।

आदिवासी उद्‌भव कथा के अनुसार आबू के अग्निकुंड से चह्वाण वंश उपजा। इस वंश में एक नरु राजा हुआ। एकबार विवाह की खुशी में वह एक कलाली के घर में घुस गया और खूब छककर दारू पी। कुछ समय बाद जब उसे तेज भूख लगी तो पाड़ा काट खाया। ये दोनों ही कार्य उसकी प्रतिष्ठा और मर्यादा के अनुकूल नहीं थे।

सुबह जब नरु का मद उतरा और सरदारों की नजर पाड़े की पूंछ पर पड़ी तो बात फैल गई कि नरु राजा तो आधी में ही वास गया था, पाड़ा खाने से वटल गया था। लोगों में एक कान से दूसरे कान बात फूटी कि नरु राजा आधी (अर्द्धरात्रि) में वासी (वासने-बू देने वाला) हो गया। इससे लोग उसे 'आधी वासी' कहने लग गये। इसी आधीवासी से कालान्तर में 'आदिवासी' नाम चल पड़ा। **-शेष पृष्ठ सात पर**

शब्द रंजन

उदयपुर, शुक्रवार 15 अक्टूबर 2021

सम्पादकीय

खबरों का महत्त्व बरकरार

अखबारों की दुनिया में छोटे कहे जाने वाले अखबारों की स्थिति अलग है। वे उस छोटी चिड़िया अथवा छोटे आदमी की तरह है जिनका गुजारा बमुश्किल ही चलता है। उनका जीवन 'टक लाओ टक खाओ' की टकटकी लिए रहता है। पैसे से पैसे बढ़ता है पर कौड़ी हो तो हाथी पर सवारी हो। पहले आवश्यकताएँ सीमित थीं तो कशमकश भी कम थी, होड़ा-होड़ी नहीं थी। व्यक्ति संतोषी तथा सामाजिक सरोकार को सुगमता से निभा लेता था।

अब सबकुछ उल्टा हो गया है। छोटे अखबारों के सामने बड़े अखबारों की बन आई है। उनके पास साधन-सुविधाएँ हैं। समाचारों की बड़ी दुनिया है। संवाददाताओं का विस्तार है। घट-पनघट से लेकर मरगट तक की खबरें हैं। विज्ञापनों का अम्बार है। जहाँ चाह वहाँ राह है। पारिवारिक लपट-झपट से लेकर राजनीतिक उठापटक तथा बाहरी बात से लेकर भीतरी घात-प्रतिकार की प्रीति रीति का राग रायता है।

यों अखबार का असर सत्ता को उलटपुट करने की ताकत के लिए होता है। छोटे अखबारों की शुरूआत एक छोटा-सा सपना लेकर देहरी का एक छोटा-सा दीप जलाने जैसी होती है।

ध्यान यही रखा रहता है कि वह मधरे-मधरे, मधुर-मधुर जलता अपनी झलक देता रहे। उम्मीदों का आकाश बड़ा नहीं हो पर छोटा भी नहीं हो। अखबार निकालना, उम्मीदों के अनुसार उसको फलाना और घर-गृहस्थी को चलाना ; ये सारे काम समयबद्ध होने के हैं।

सबकुछ होने के बावजूद चाहे हम कितनी ही गति-प्रगति करलें, अखबारों का महत्त्व कम नहीं होने का। वर्षों पूर्व गोपालप्रसाद व्यास ने दैनिक हिन्दुस्तान में 'नारदजी खबर लाए हैं' नाम से हर रविवार को स्तंभ शुरू किया था। वह खूब चला। खूब चर्चित हुआ। वर्षों तक पढ़ा जाता रहा। अचानक जब उसे बन्द कर दिया तो अनेक पाठकों ने मांग-पर-मांग की। बड़ा हल्लागुल्ला देख वह स्तंभ पुनः शुरू हुआ। आज भी उसकी याद बनी हुई है। खबरें तो हमारे ईर्दगिर्द हमारी स्वांसों की तरह पैदा हो रही हैं।

आज के युग में जनसंवाद के अनेक माध्यम विकसित हुए जा रहे हैं। हमारे देखते-देखते कान से उठे माध्यम आंख से जुड़े और अब पुनः मोबाईल से आंख से कम कान से ज्यादा चिपकु हुए लग रहे हैं। यह क्रम भले ही अदला-बदली करते रहें पर तब भी खबरें और खबर देते अखबार रहेंगे।

काव्या की रजत जन्मिका

डॉ. कहानी-जितेन्द्र मेहता की सुपुत्री काव्या के जन्म के 25 वर्ष पूरे होने पर धवल केक काटी गई। धवल वसन में काव्या ने अपने सभी परिजनों के प्रति आभार व्यक्त किया। नाना डॉ. महेन्द्र भानावत ने निम्नोक्त पंक्तियों में काव्याशीष दिया-

धवल चांदनी स्वर्ण पथा नौका विहार है।
अमृत के डांडों से बहती अमित धार है।
शतवंती रश्मियां झुलाती रेशमदारी।
कहनीजा काव्या रचती है कसीदाकारी।
है अजीब संयोग मेह ताम्र पत्रों में खिलखिल।
उदियापुर में गजब इन्द्र परगासा झिलमिल।

- युक्ता मेहता

राजकुमार जोशी (लीलू) का निधन

उदयपुर (ह. सं.)। राजकुमार जोशी (लीलू) का 15 अक्टूबर को असामयिक निधन हो गया। वे अपने पीछे ओमप्रकाश-प्रेमलता (पिता-माता) राजेन्द्र-संध्या (भाई-भाभी), विजयलक्ष्मी (पत्नी) तथा लुतिष्ठ एवं दिव्यप्रताप नामक दो पुत्रों का भरापूरा परिवार छोड़ गये हैं।

शब्द रंजन कार्यालय में आयोजित श्रद्धांजलि में श्री जोशी से जुड़े इष्टमित्रों ने विचार व्यक्त करते बताया कि वे परम स्नेही, परम यारबाज तथा सबके लिए सदैव हर काम के लिए तत्पर रहते थे। यही नहीं, उन्हें सब तरह की खरीददारी, भावताव तथा चीजों की सही उपलब्धता की गहरी परख थी। श्रद्धांजलि में डॉ. तुक्तक भानावत सहित सुमित गोयल, हिम्मतसिंह चौहान, शैलेष नागदा, मुकेश जैन, अजय सरूपरिया, मुकेश हिंगड़, दिलीप जैन, आशीष देवपुरा, विनयदीप कुशवाह, राकेश सुहालका, डॉ. शूरवीरसिंह भाणावत, अजय आचार्य, अल्पेश लोढ़ा, लोकेश नाहर, दिनेश सुहालका, विनोद जैन, धर्मेन्द नागोरी, डॉ. रवि शर्मा, कपिल श्रीमाली तथा जार के सदस्य उपस्थित थे।

लोकसंस्कृति अध्येता डॉ. महेन्द्र भानावत को बोधि सम्मान

अपने जीवन का बहुमूल्य समय भारतीय लोकसंस्कृति, साहित्य एवं समाज को अर्पित करते जो लोकापयोगी सर्जन किया उसके फलस्वरूप डॉ. महेन्द्र भानावत को बोधि सम्मान से अलंकृत किया गया। समारोह में आचार्यश्री महाश्रमण ने कहा कि अच्छे कार्यों का सम्मान होना व्यक्ति के निजी गुणों का मूल्यांकन है। इससे व्यक्ति को आत्मतोष एवं प्रोत्साहन तथा अन्यों को आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलती है।

भीलवाड़ा के तेरापंथ नगर में आचार्यश्री महाश्रमण की सन्निधि में 03 अक्टूबर को आयोजित समारोह में डॉ. भानावत ने कहा कि पिछले सात दशक से अपने लेखन के माध्यम से मैंने समग्रतः उस लोक का ही परिदर्शन किया है जो हम सबके साथ दृश्य एवं अदृश्य रूप में आस्था एवं विश्वास के सबब बनाये हुए है।

इस अवसर पर डॉ. महेन्द्र भानावत, डॉ. देव कोठारी, प्रो. धर्मचन्द जैन एवं चतुर कोठारी को इस सम्मान से नवाजा गया। शासनसेवी श्री भंवरलालजी कर्णावट फाउण्डेशन द्वारा दिया जाने वाला विगत चार वर्षीय यह सम्मान उनके परिजन लक्ष्मणसिंह, गुणसागर, डूंगरसिंह, डॉ. महेन्द्र तथा दरियावसिंह कर्णावट द्वारा प्रदान किया गया। साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने कर्णावट परिवार द्वारा की जा रही सेवाओं का उल्लेख किया। कार्यक्रम में मनोहरलाल डागा, तलकचन्द जैन, कन्हैयालाल बाफना, दौलतमल भरकतिया, नवरत्न हिरन, दिनेश डागा, अनिल तलेसरा, अशोक श्रीश्रीमाल सहित कई गणमान्य श्रावक-श्राविकाएं उपस्थित थे। संचालन श्रीमती लता कर्णावट ने किया।

समारोह पश्चात डॉ. तुक्तक भानावत, डॉ. कहानी भानावत, अलर्ट संस्थान के जितेन्द्र मेहता, प्रसिद्ध बालसाहित्य लेखक राजकुमार जैन 'राजन', डॉ. कविता मेहता, डॉ. सतीश मेहता, गैर समारोह के जनक निहाल अजमेरा, महावीर नागोरी, मधु डागा ने डॉ. भानावत को बधाई दी।

-डॉ. तुक्तक भानावत

क्रूर दमन के बावजूद निर्भय साहसी पत्रकारों को नोबेल

डॉ. वेदप्रताप वैदिक

फिलीपींस की महिला पत्रकार मारिया रेसा और रूस के पत्रकार दिमित्री मोरातोव को नोबल पुरस्कार देने से नोबेल कमेटी की प्रतिष्ठा बढ़ गई है, क्योंकि आज की दुनिया अभिव्यक्ति के भयंकर संकट से गुजर रही है। इन दोनों पत्रकारों ने अपने-अपने देश में शासकीय दमन के बावजूद सत्य का खांडा निर्भीकतापूर्वक खड़काया है।

'लोकतंत्र के तीन खंभों विधानपालिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका के अलावा मेरी समझ में चौथा खंभ खबरपालिका है जो सबकी खबर ले और सबको खबर दे।'

जिन देशों को हम दुनिया का सबसे बड़ा और सबसे पुराना लोकतंत्र कहते हैं, वे भी अभिव्यक्ति की आजादी के हिसाब से एकदम फिसड्डी-से दिखाई पड़ते हैं। 'विश्व प्रेस आजादी तालिका' के 180 देशों में फिलीपींस का स्थान 138वां है और भारत का 142 वां। यदि पत्रकारिता किसी देश की इतनी फिसड्डी हो तो उसके लोकतंत्र का हाल क्या होगा?

लोकतंत्र के तीन खंभे बताए जाते हैं। विधानपालिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका। मेरी राय में एक चौथा खंभा भी है। इसका नाम है— खबरपालिका, जो सबकी खबर ले और सबको खबर दे। पहले तीन खंभों के मुकाबले यह खंभा सबसे ज्यादा मजबूत है। हर शासक की कोशिश होती है कि इस खंभे को खोखला कर दिया जाए। शेष तीनों खंभे तो अक्सर पहले से काबू में ही रहते हैं लेकिन पत्रकारिता ने अमेरिका और ब्रिटेन जैसे लोकतांत्रिक देशों में भी उनके राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री के दम फुला रखे हैं। यही काम मारिया ने फिलीपींस में और मोरातोव ने रूस में कर दिखाया है।

फिलीपींस के राष्ट्रपति रोड्रिग्गो दुतर्ते ने मादक-द्रव्यों के विरुद्ध ऐसा जानलेवा अभियान चलाया कि उसके कारण सैकड़ों निर्दोष लोग मारे गए और जेलों में ठूंस दिए गए। इस नृशंस अत्याचार के खिलाफ मारिया ने अपने डिजिटल मंच 'रेपलर' से राष्ट्रपति की हवा खिसका दी थी। राष्ट्रपति ने मारिया के विरुद्ध भद्दे शब्दों का इस्तेमाल किया और उनकी हत्या की भी धमकी दी थी लेकिन वे अपनी टेक पर डटी रहीं।

इसी प्रकार मोरातोव ने अपने अखबार 'नोवाया गज्येता' के जरिए राष्ट्रपति व्लादिमीर पूतिन के अत्याचारों की पोल खोलकर रखदी। रूस में तो अखबारों पर कम्युनिस्ट पार्टी का कठोर शिकंजा कसे रखने की पुरानी परंपरा थी। अब से 50-55 साल पहले जब मैं मॉस्को में 'प्रावदा' और 'इजवेस्तिया' पढ़ता था तो इन रूसी भाषा के ऊबाऊ अखबारों को देखकर मुझे तरस आता था लेकिन अब कम्युनिस्ट शासन खत्म होने के बावजूद पत्रकारिता की आजादी के हिसाब से रूस का स्थान दुनिया में 150वां है।

ऐसी दमघोंटू दशा में भी मोरातोव ने 'नोवाया गज्येता' के जरिए पूतिन की गद्दी हिला रखी थी। सरकारी भ्रष्टाचार और चेचन्या में किए गए पाशविक अत्याचारों की खबरें मोरातोव और उनके साथियों ने उजागर कीं।

उनके छह साथी पत्रकारों को इसीलिए मौत के घाट उतरना पड़ा। इसीलिए नोबेल पुरस्कार स्वीकार करते हुए उन्होंने इन छह साथी पत्रकारों को श्रद्धांजलि दी और कहा कि यह पुरस्कार उन्हीं को समर्पित है।

भारत समेत दुनिया के कई देशों में ऐसे निर्भीक और निष्पक्ष पत्रकार अभी भी कई हैं, जो नोबेल पुरस्कार से भी बड़े सम्मान के पात्र हैं। उक्त दो पत्रकारों का सम्मान ऐसे सभी पत्रकारों का हौसला जरुर बढ़ाएगा। मारिया और मोरातोव को बधाई।

कोमल वाधवानी का चौथा लघुकथा संग्रह विमोचित

उज्जैन (वि.)। क्षितिज साहित्य संस्था द्वारा श्री मध्य भारत हिन्दी साहित्य समिति सभागार में आयोजित लघुकथा सम्मेलन में वरिष्ठ लघुकथाकार कोमल वाधवानी 'प्रेरणा' के चौथे लघुकथा संग्रह 'रास्ते और भी हैं' का विमोचन हुआ।

मुख्य अतिथि ख्यात साहित्यकार डॉ. शरद पगारे, नरहरि पटेल, मध्यप्रदेश साहित्य अकादमी के निदेशक डॉ. विकास दवे, सत्यनारायण व्यास, वरिष्ठ लघुकथाकार डॉ. रामकुमार घोटड़, सतीश राठी एवं कांता राय उपस्थित थे। इस अवसर पर वाधवानी को विशेष उपलब्धि सम्मान से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में आशागंगा प्रमोद शिरढोणकर, संतोष सुपेकर का उल्लेखनीय योगदान रहा।

वरिष्ठ साहित्यकार वेद व्यास की पुस्तक 'अंधेरे में रोशनी की तलाश' का जयपुर में लोकार्पण करते सुप्रसिद्ध गांधीवादी सुब्बाराव। यह निबंध संग्रह महात्मा गांधी, डॉ. अम्बेडकर, जवाहरलाल नेहरू एवं सरदार पटेल के जीवन दर्शन पर केंद्रित है।

ARCHI
Creating Signature Address
Since 1998
27 Projects
4000 Happy Faces
23 years of Legacy
25 Lac sq.ft. Space Delivered
8 Ongoing Projects
Pearl Paradise
Under Construction
3 & 4 BHK
Luxury Apartments
Rera No.: RAJ/P/2020/1233
Meera Nagar, Shobhagpura Mikado School Rd. Udaipur (Raj.)
The Harmony
AN URBAN LIVING
Under Construction
3 & 4 BHK
Signature Apartments
Rera No.: RAJ/P/2021/1500
RK Circle - Shobhagpura Road Opp Coffee Culture. Udaipur (Raj.)
PEACE PARK
feel the peace.....
Near Completion
2/3/4 BHK
Premium Apartments
Rera No.: Phase 1 - RAJ/P/2019/1027 Phase 2 - RAJ/P/2019/1028
1-New Vidhya Nagar Hiran Magri, Sec. 4, Udaipur (Raj.)
Royal City
आपका घर - आपके बजट में
Ready Possession
1/2/3 BHK
Apartments
Rera No.: RAJ/P/2018/625
Airport Rd, Pratapnagar, Opp Hotel Valley View Udaipur (Raj.)
ARCADE
Near Completion
2/3/4 BHK
Premium Apartments
Rera No.-RAJ/P/2019/964
New Bhopalpura, Behind Laxman Vatika Udaipur , (Raj.)
LOVENEST
Under Construction
2 & 3 BHK
Apartments
Rera No.: RAJ/P/2019/1156
Rajeshwari Resort - Geetanjali Road Manwakheda, Udaipur (Raj.)
ARCHI GROUP OF BUILDERS
Ground Floor, Archi Arihant Building, 100 ft. Road, Nr. JK Paras, Sobhagpura Circle, Udaipur - 313001 | Ph.: +91 94141 55525, +91 750 650 4498 | Web: archigroup.in

बाजार / समाचार

एचडीएफसी बैंक को 17.6 प्रतिशत का शुद्ध लाभ

उदयपुर (वि.)। एचडीएफसी बैंक लि. ने 30 सितम्बर 2021 को समाप्त हुयी तिमाही के दौरान 8834.3 करोड़ का शुद्ध लाभ अर्जित किया है, जो कि गत वर्ष के इसी सत्र के 7513.11 करोड़ रूपये के मुकाबले में 17.6 प्रतिशत ज्यादा है।

कम्पनी के निदेशक मण्डल ने आयोजित बैठक में कार्य परिणामों को स्वीकृति प्रदान की। बैंक का शुद्ध राजस्व 30 सितम्बर 2021 को 14.7 प्रतिशत बढ़कर 25085.2 करोड़ रूपये का हो गया, जो गत वर्ष की समान तिमाही पर 21868.8 करोड़ रूपये था। 30 सितम्बर 2021 बैंक की शुद्ध ब्याज आय 12.1 प्रतिशत बढ़कर 17684.4 करोड़ रूपये की हो गई जो गत वर्ष को 15776.4 करोड़ रूपये थी। रिलेशनशिप मैनेजमेंट, डिजिटल ऑफरिंग एवं वृहद उत्पादों के चलते अग्रिम भी 15.5 प्रतिशत वृद्धि के साथ नई ऊंचाइयों पर पहुंच गये। कोर शुद्ध ब्याज मार्जिन 4.1 प्रतिशत पर रहा। उक्त तिमाही के दौरान जोड़े गये दायित्व संबंध सर्वकालिक उच्च स्तर पर रहे। अन्य आय (गैर-ब्याज राजस्व) 7,400.8 करोड़ रुपये शुद्ध राजस्व का 29.5 प्रतिशत था।

एचडीएफसी एर्गो की हिन्दी भाषा में वेबसाइट लॉन्च

उदयपुर (वि.)। एचडीएफसी एर्गो जनरल इंश्योरेन्स ने अपनी पूर्ण विकसित हिन्दी वेबसाइट को लॉन्च किया है। इसके साथ ही एचडीएफसी एर्गो जनरल इंश्योरेन्स उन कुछ एक ब्राण्ड में शामिल हो गया है, जिन्होंने एक द्विभाषी वेबसाइट (अंग्रेजी और हिन्दी में) की पेशकश की है।

शेयर्ड सर्विजस और ऑनलाइन बिजनेसेस के प्रेसिडेंट महमूद मंसूरी ने कहा कि एचडीएफसी एर्गो एक डिजिटल-फर्स्ट कंपनी है, जिसने हमेशा देशभर में उपभोक्ताओं को डिजिटल तरीके से सक्षम बनाने पर ध्यान दिया है। कंपनी की सेवाएं ग्राहकों को आसानी से उपलब्ध हों। केपीएमजी द्वारा प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार 521 मिलियन लोग हिन्दी का इस्तेमाल अपनी मुख्य भाषा के तौर पर करते हैं। 39 प्रतिशत लोग इंटरनेट को एक्सेस करते समय इस भाषा का इस्तेमाल करते हैं इसलिये, इस वेबसाइट का कंटेन्ट हिन्दी में उपलब्ध कराया गया है, ताकि देश की बड़ी आबादी आसानी से कंपनी के उत्पादों और सेवाओं को समझ सकें और एक्सेस कर सकें। हमारे ग्राहक डिजिटल सेल्फ-सर्विस को तेजी से अपना रहे हैं और 60 प्रतिशत अनुरोधों की सर्विस डिजिटल तरीके से हो रही है।

चार करोड़ से बनने वाले चार मंजिला भवन का भूमिपूजन

उदयपुर (वि.)। जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ डीम्ड टू बी विश्वविद्यालय की ओर से 04 करोड़ की लागत से बनने वाले डिपार्टमेंट ऑफ डी फार्मा, विज्ञान संकाय के लिए बनने वाले चार मंजिला भवन का भूमि पूजन कुलपति प्रो. एस. एस. सारंगदेवोत, रजिस्ट्रार डॉ. हेमशंकर दाधीच, प्राचार्य प्रो. सुमन पामेचा, चीफ इंजीनियर एम.सी. सिंघवी, सहायक कुल सचिव डॉ. धमेन्द्र राजौरा ने किया। प्रो. सारंगदेवोत ने बताया कि 30 हजार स्क्वायर फीट पर बनने वाला यह भवन पूरी तरह आधुनिकता लिए हुए होगा।

इसमें सभी प्रकार की सुविधाओं के साथ कक्षा कक्ष, लेब, कम्प्यूटर लाईब्रेरी के साथ पार्किंग की व्यवस्था की गई है। यह कार्य नौ माह में पूरा कर आगामी सत्र इसी नवीन परिसर में शुरू किया जायेगा। कार्यक्रम में योग विभाग के डॉ. दिलीपसिंह चैहान, डॉ. रक्षित आमेटा, कृष्णकांत कुमावत, डॉ. ओम पारीख, राजू शर्मा, प्रतापसिंह , शिवशंकर मेनारिया मौजूद थे।

क्लिनिकल पैथोलॉजी, हेमेटोलॉजी एवं ब्लड बैंकिंग पुस्तक विमोचित

उदयपुर (वि.)। गीतांजली विश्वविद्यालय के परीक्षा विभाग के डिप्टी रजिस्ट्रार राकेश जोशी द्वारा लिखित पुस्तक 'क्लिनिकल पैथोलॉजी, हेमेटोलॉजी एवं ब्लड बैंकिंग' का विमोचन किया गया।

इस अवसर पर गीतांजली समूह के एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर अंकित अग्रवाल, कुलपति डॉ. एफ. एस. मेहता, रजिस्ट्रार भूपेन्द्रसिंह मन्डलिया, डीन डॉ. नरेन्द्र मोगरा तथा सम्बंधित कॉलेज के प्राचार्य एवं डीन उपस्थित थे।

वायरल बुखार से पीड़ित मरीज का सफल इलाज

उदयपुर (वि.)। पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडीकल साइंसेज (पिम्स) हॉस्पिटल, उमरड़ा में चिकित्सकों ने गंभीर वायरल बुखार से पीड़ित मरीज का सफल उपचार किया है। चेयरमेन आशीष अग्रवाल ने बताया कि दो सप्ताह पूर्व 20 वर्षीय युवक को गंभीर स्थिति के चलते पिम्स हॉस्पिटल में लाया गया। भर्ती के समय मरीज का मस्तिष्क ठीक से काम नही कर रहा था तथा उसे मुंह और मूत्र मार्ग से रक्तस्त्राव (ब्लीडिंग) हो रही थी। जांच में पता चला कि उसके गुर्दे व लिवर भी ठीक से काम नही कर रहे थे और प्लेटलेट्स मात्र 9000 तक थे। इस पर तुरंत मरीज को आई.सी.यू. में भर्ती कर डॉ. राजेश खोईवाल, निश्चेतना विभाग की डॉ. कमलेश, आई.सी.यू. स्टाफ व रेजिडेंट्स ने इलाज प्रारम्भ किया। दो सप्ताह बाद मरीज की स्थिति में पूर्ण रूप से सुधार हुआ। मरीज अपने दैनिक कार्य कर पा रहा है और उसके मस्तिष्क, किडनी एवं लिवर भी पूर्ण रूप से ठीक है।

बच्चेदानी का दूरबीन विधि से सफल उपचार

उदयपुर (वि.)। भीलों का बेदला स्थित पेसिफिक मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल में चिकित्सकों ने अत्यन्त जटिल बच्चेदानी का दूरबीन द्वारा सफल ऑपरेशन किया है।

स्त्री एवं प्रसूति रोग विभाग की डॉ. आभा गुप्ता ने बताया कि 52 वर्षीय महिला को अत्यधिक महावारी, लगातार दर्द एवं खून की कमी के चलते पीएमसीएच लेकर आए। यहां जॉच में महिला के गर्भाशय में असंख्य गांठें थी। इस पर दूरबीन द्वारा टोटल लेप्रोस्कोपिक हिस्टेरेक्टमी सर्जरी के द्वारा गर्भाशय को निकाला गया। महिला अब पूरी तरह से स्वस्थ्य है। ऑपरेशन में डॉ. आभा गुप्ता के साथ डॉ. मीनल चुघ, निश्चेतना विभाग के डॉ. प्रकाश औदिच्य, डॉ. कृष्णगोपाल एवं टीम का योगदान रहा।

एचडीएफसी बैंक की 12वीं ब्रांच का शुभारंभ

उदयपुर (वि.)। एचडीएफसी बैंक की 12वीं ब्रांच का उदियापोल पर मुख्य अतिथि अरावली ग्रुप के मैनेजिंग डायरेक्टर एम. एल. लुणावत ने दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ किया।

बैंक के सर्किल हेड कुमार सौरभ ने बताया कि शहर में बैंक की 12वीं तथा जिले में 15वीं ब्रांच के रूप में इस शाखा का शुभारंभ हुआ है। आगामी समय में ग्राहकों की सुविधा को देखते हुए उदयपुर में और ब्रांच खोलना द्वारा प्रस्तावित है। एम. एल. लुणावत ने बताया कि एचडीएफसी बैंक सुव्यवस्थित है और यहां की टीम ग्राहकों को अच्छी बैंकिंग सेवा प्रदान करती है। संचालन क्लस्टर हैड देवेंद्रसिंह ने किया। ब्रांच मैनेजर हितेश भावनानी ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

अनुसूचित जनजाति वर्ग की एक हजार महिलाओं को मिलेगा रोजगार का अवसर

जयपुर (सुजस)। तमिलनाडू के होसुर में उच्च तकनीक के इलेक्ट्रोनिक पार्ट्स बनाने हेतु स्थापित संयंत्र में राजस्थान की जनजाति वर्ग की 1000 महिलाओं जिनकी आयु 18 से 20 वर्ष है तथा 12वीं उत्तीर्ण है, को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराये जायेंगे। इसके लिए आवेदन की अंतिम तिथि 15 नवम्बर तक बढ़ाई गई है।

इस प्रस्ताव पर जनजाति क्षेत्रीय विकास विभाग, उदयपुर द्वारा इच्छुक एवं पात्र जनजाति वर्ग की महिलाओं से आवेदन पत्र विभाग की वेबसाईट tad.rajasthan.gov.in पर आमंत्रित किये जा रहे हैं। जनजाति क्षेत्रीय विकास विभाग की आयुक्त सुश्री प्रज्ञा केवलरमानी ने बताया कि महिलाओं के बढ़ते रूझान को देखते हुये आवेदन की अंतिम तिथि बढाई गई है। प्राप्त आवेदनों में से चयनित अभ्यर्थियों को 30 दिन का नि:शुल्क आवासीय प्रशिक्षण दिया जाएगा एवं सफलतापूर्वक प्रशिक्षण उपरान्त रोजगार प्रदान किया जाएगा। इन महिलाओं को कंपनी से संबद्ध शैक्षणिक संस्थानों से आगे की शिक्षा प्राप्त करने का अवसर भी प्राप्त होगा।

एशियन का 'ताना बाना' वाल टेक्सचर पेश

उदयपुर (वि.)। एशियन पेन्ट्स रॉयल प्ले ने त्यौहारों के मौसम की शुरुआत आकर्षक वाल टेक्सचर 'ताना बाना' से की है। भारतीय शिल्प और बुनावट की विरासत से प्रेरित 'ताना बाना' कला का एक नमूना है जो भिन्न किस्म की भावनाओं और यादों को उभारेगा।

एशियन पेन्ट्स लि. के प्रबंध निदेशक और सीईओ अमित सिंगले ने कहा कि एशियन पेन्टस में हमें 'रॉयल प्ले ताना बाना' साझा करते हुए खुशी हो रही है। यह सही अर्थों में वाल टेक्सचर का एक विशेष कलेक्शन है जो भारत के शिल्पकारों और उनके शिल्प से प्रेरित है। इन शिल्पों का दीवारों में निर्बाध पारगमन न सिर्फ जुड़ाव की मजबूत भावना का विकास करेगा बल्कि एक अनूठी सजावट का थीम भी तैयार करेगा। यह कलेक्शन भारतीय घरों में आसानी से फिट होगा और अच्छी यादें सामने लाएगा। 'ताना बाना' का मतलब है किसी काम को करने के लिए किए जाने वाले आवश्यक प्रबंध जैसे कि कपड़ा बुनने के लिए निश्चित लंबाई और चौड़ाई के बल यानी बुने हुए सूत।

जिंक एसएंडपी ग्लोबल मेटल अवार्ड्स से सम्मानित

उदयपुर (वि.)। हिंदुस्तान जिंक को लंदन में हुए एसएंडपी ग्लोबल मेटल अवार्ड्स में इंडस्ट्री लीडरशिप अवार्ड-बेस, प्रीशियस एंड स्पेशियलिटी मेटल्स पुरस्कार से सम्मानित किया गया। अवार्ड्स के नौवें संस्करण में व्यक्तिगत और कॉर्पोरेट उपलब्धियों में जिंक को विभिन्न 16 श्रेणियों में धातु उद्योग में सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार से सम्मानित किया। जिंक ने विश्व के 21 देशों में 112 फाइनलिस्ट में से इंडस्ट्री लीडरशिप अवार्ड का गौरव हासिल किया है।

मुख्य कार्यकारी अधिकारी अरूण मिश्रा ने कहा कि यह मान्यता हमारे नवाचार और प्रौद्योगिकी के दृष्टिकोण का परिणाम है जो हमारे संचालन में उच्च प्रदर्शन को बढ़ावा देता है।

फेस्टिव ट्रीट्स में 10,000 से ज्यादा ऑफर्स

उदयपुर (वि.)। एचडीएफसी बैंक अपने फेस्टिव ट्रीट्स 3.0 अभियान के हिस्से के रूप में 10,000 से अधिक ऑफ़र के साथ सभी भारतीयों को खुशियां प्रदान करते हुए उनके दिल रोशन करने के लिए पूरी तरह से तैयार है। इस बार बैंक ने ऑफर्स को 10 गुणा तक बढ़ाया है। इस साल फेस्टिव ट्रीट्स में काड्र्स, लोन्स और ईएमआई पर 10,000 से अधिक ऑफर्स प्रदान किए जा रहे हैं।

इस साल के फेस्टिव ट्रीट्स की थीम 'करो हर दिल रोशन' है। यह इस विश्वास छोटे से छोटे कार्य भी व्यापक प्रभाव डाल सकते हैं और दूसरों के जीवन को बदल सकते हैं। बैंक अपनी शाखाओं, एटीएम, स्टोर/वेबसाइटों के साथ साझेदारी और डिजिटल मीडिया अभियानों के माध्यम से प्रत्येक भारतीय तक पहुंचने का प्रयास कर रहा है, और सभी ग्राहकों पर खास ध्यान दिया जा रहा है।

बैंक ने शानदार डील्स का लाभ उठाने का अवसर प्रदान करने के लिए 100 से अधिक स्थानों पर 10,000 से अधिक व्यापारियों और कंपनियों के साथ भागीदारी की है। इसके साथ ही कई अन्य प्रमुख रीजनल ब्रांड्स के साथ ही सहभागिता की गई है जिनमें विजय सेल्स, पॉथीज, डिजीवन, चेन्नई सिल्कस, जीआरटी ज्वैलर्स, फोनवाले, सरगम इलेक्ट्रॉनिक्स, पूर्विका मोबाइल्स, और इलेक्ट्रॉनिक पैराडाइज आदि कुछ प्रमुख नाम शामिल हैं

साध्वीश्री मंजुलाजी ने देह छोड़ी

लाडनूं निवासी साध्वीश्री मंजुलाजी ने 12 अक्टूबर को दिल्ली में शरीर छोड़ा। साध्वीश्री मंजुलाजी पन्द्रह वर्ष की अवस्था में गुरुदेवश्री तुलसी से दीक्षित हुईं। उन्होंने तीन दशक तक धर्मसंघ में साधना कर आध्यात्मिक और बौद्धिक विकास किया। वे तेरापंथ धर्मसघ की साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा की बहिन थीं। इसे नियति का योग कहिये कि वे धर्मसंघ से मुक्त हो दिल्ली में अपने संग कुछ साध्वियों के साथ आत्मकल्याणरत रहीं। **-राजेंद्र विरानी**

ठिकाने के ठौड़-ठौड़ कागजात को ठिकाने लगाये

- डॉ. जे. के. ओझा -

''ठिकाने से मेरी मुलाकात इससे पूर्व हो जाती तो जो एक-एक कागज उनके पूर्वजों द्वारा संभाल कर संजोये हुए थे उन्हें खुर्दबुर्द होने से बचा लेता और ठिकाने में ही उन्हें व्यवस्थित एवं सुरक्षित करा देता। कभी सोचा भी नहीं था कि कानोड़ में 32 वर्ष रहकर ठिकाने के सरस्वती भण्डार की अथाह सामग्री में से मुझे कबाड़ी के माध्यम से कोई बूंद हाथ लगेगी जिसको मैं मोतीवत् वहां की ऋण अदायगी कर सकूंगा।''

1978 ई. में मैंने पूर्व मेवाड़ राज्य के सुप्रसिद्ध प्रथम श्रेणी के कानोड़ ठिकाने में पं. उदय जैन महाविद्यालय में इतिहास के सह-आचार्य पद पर कार्य करना प्रारम्भ किया। शोध-खोज की प्रवृत्ति 1971 ई. से ही मुझ में रचपच गई थी। अत: महाविद्यालय समय के बाद व अवकाश के दिनों में कानोड़ व आसपास के क्षेत्रों को दृष्टिबंध करता रहा।

1983 ई. में सब्जी खरीदते हुए सड़क पर रूलते पुराने कागज को देखा। वह कागज किसी ने मिठाई खाकर फेंक रखा था। मैं बेझिझक उसे उठाकर पढ़ने लगा। पास में बशीर मंसूरी लारी वाले से पूछा कि ऐसे कागज कहां, किस दुकान पर हैं ? उसने बताया कि रद्दी के भाव ऐसे कागज हर दुकान और लारी वाले के पास मिल जायेंगे। यह कागज पास ही मिठाई विक्रेता मांगीलालजी पोखरना की दुकान का लगता है। यह सुन मैं सीधा पोखरनाजी की दुकान पर जा पहुंचा। उन्होंने बताया कि ऐसी कई बहियां सौ रूपया क्विंटल में गण्या महाराज से खरीदी हैं।

कानोड़ राजमहल

वहां से मैं उनके बताये स्थान पर पहुंचा तो देखा कि गण्या महाराज उर्फ गणेशलाल श्रीमाली बड़ी बेरहमी से बहियों के ऊपर चढ़ा चमड़े का पुट्ठा काटते भीतर के कागज फाड़ रहे थे। पूछने पर बोले कि इस चमड़े की जूते में रखने की तलियां बनेंगी और कागज नाथद्वारा में पचास रूपया किलो में बिकेंगे जो चित्र कोरने में काम आयेगा। मैंने जब खरीदने की बात कही तो ढाई सौ रूपया क्विंटल का भाव बताया। मैं रोज वहां जा उन कागजों को देखता। महाराज पढ़े-लिखे नहीं थे पर उनकी समझ बड़ी तगड़ी थी। मैं पढ़कर उन्हें सुनाता तो वे तत्काल कहते, यह श्रीमालियों के काम का है। यह पट्टों की लिखावट है। यह सेटलमेन्ट का रिकॉर्ड है। ऐसा कह वे सुरक्षित कर लेते। मेरी समझ भी परिपक्व नहीं थी। मैं राजनीतिक इतिहास सम्बन्धी कागजात ढूंढ़ता। मैंने जयपुर, उदयपुर, सीतामाऊ पत्र लिखकर सूचित किया कि कानोड़ ठिकाने का रिकॉर्ड कबाड़ी बेच रहा है। केवल महाराजकुमार डॉ. रघुबीरसिंहजी सीतामाऊ का पत्र आया कि तुम ठिकाने के सारे कागजात खरीद कर यहां ले आओ।

यह सोच करीब पांच क्विंटल कबाड़ा 250 रूपये प्रति क्विंटल भाव से और 450 रूपये प्रति क्विंटल से 20 किलो हातिम भाई बोहरा से खरीद एक ट्रक सीतामाऊ भेज दिया जिसका टेबल पेमेन्ट सीधा गण्या महाराज को कर दिया। खरीद तय हो जाने के बाद भी महाराज आतिशबाजी वालों को सस्ते भाव रद्दी बेच रहे थे।

मेरी खरीद वाला काफी रिकॉर्ड दीमक अधिक होने से नष्ट हो गया। 1985 ई. में कानोड़ के रावत प्रतापसिंहजी से मेरे निकटतम सम्बन्ध बने किन्तु तब तक बहुत देर हो चुकी थी। उनके भोलेपन से ठिकाने के कमरों की साफ-सफाई कराने से भाईलोगों ने अच्छा दस्तावेजी रिकॉर्ड कौड़ियों के भाव कर बिकवा दिया।

डॉ. महेन्द्र भानावत ने 'कानोड़ की रद्दी में कंचन का ढेर' नाम से कभी एक रपट लिखी थी। वास्तव में ढूंढ़ने पर तो ईश्वर भी मिल जाता है। मेरे में भी एक ललक और जिज्ञासा थी जिससे मैंने रद्दी वाले से कबाड़ा खरीदा। ठिकाने से मेरी मुलाकात इससे पूर्व हो जाती तो जो एक-एक कागज उनके पूर्वजों द्वारा संभाल कर संजोये हुए थे उन्हें खुर्दबुर्द होने से बचा लेता और ठिकाने में ही उन्हें व्यवस्थित एवं सुरक्षित करा देता। वहां शोधार्थी जाकर शोध करते।

फिर भी ईश्वर को जो करना होता है उससे आगे इन्सान बेबस होता है। प्रारब्ध कानोड़ को मेरी कलम से ही उजागर करना चाहता था। कभी सोचा भी नहीं था कि कानोड़ में 32 वर्ष रहकर ठिकाने के सरस्वती भण्डार की अथाह सामग्री में से मुझे कबाड़ी के माध्यम से कोई बूंद हाथ लगेगी जिससे मैं वहां की ऋण अदायगी कर सकूंगा।

डॉ. छतलानी अंतर्राष्ट्रीय शिक्षक गौरव से सम्मानित

उदयपुर (वि.)। जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ विवि के डॉ. चन्द्रेशकुमार छतलानी को इस वर्ष अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षक गौरव पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह सम्मान हरियाणा के बोहल शोध मंजूषा द्वारा शिक्षा, शोध, साहित्य एवं समाज में उत्कृष्ट कार्य हेतु प्रदान किया गया। कुलपति प्रो. एस. एस. सारंगदेवोत ने बताया कि डॉ. छतलानी शिक्षा एवं शोध के क्षेत्र में काफी सक्रिय हैं। कोरोना से लड़ते हुए उन्होंने विभिन्न संस्थाओं से एक हजार से अधिक प्रमाणपत्र अर्जित करने के साथ विश्वविद्यालय में शैक्षिक क्षेत्र की महत्त्वपूर्ण रणनीति व योजनाएं बनाईं।

माँ के हजार रूप अरूप सरूप

एक शब्द नहीं एक भाव है माँ
निश्वार्थ रहे वो लगाव है माँ
छल कपट युक्त व्यापार नहीं
कुछ पाने का आधार नहीं
वो कामधेनु वो कल्पवृक्ष

गंगाजल जैसा प्रेम स्वच्छ
वो हाथ वही तो पांव है माँ
होती तो भ्रूणों की भी माँ
होती तो नागिन भी है माँ
एक मादा मात्र नहीं है माँ
है जहाँ ममत्व वहीं है माँ
कर्त्तव्य भरा एक चाव है माँ
माँ बेहद कड़वी औषधि है
माँ माधव जैसी सारथि है
निर्भीक सद्गुणीं वीर है माँ
एक धर्म धनुष का तीर है माँ
निष्कपट सदा वर्ताव है माँ
जो साथ रहे वो साया है
जो पाले वो तो आया है
शिशु मिट्टी एक कुम्हार है माँ
हर मैल धोय जलधार है माँ
जो ममता से नासूर हुआ
वो बहुत पुराना घाव है माँ
एक शब्द नहीं एक भाव है माँ
निश्वार्थ रहे वो लगाव है माँ

-रीतेश दुबे

तुम्हें चुनकर

तुम्हें चुनकर
मैंने अपने बच्चों के भावी स्वभाव को चुना
तुम्हारे कारण छोटे मोटे अपराध माफ कर देंगे मेरे बच्चे
अपने साथियों के थोड़ा सा झूठ बोलने को
बुरा नहीं समझेंगे वे
किसी की कड़वी बात भी सह लेंगे
यह सोचकर कि शायद
यह आदमी कभी हमारे कुछ काम आये।
तुम्हें चुनकर
मैंने अपने बच्चों में दुनियादारी चुनी
अपने जैसे ही स्वभाव की कोई चुनी होती अगर
तो हर एक में उलझते रहते मेरे बच्चे
व्यवस्था के विरूद्ध झगड़ते ही रहते हरदम
उसूलों के नाम पर जलते-उबलते रहते।
तुम्हें चुनकर
मैंने घर की शांति चुनी
उनके लिए अच्छी नौकरियां चुनीं
सुखी गृहस्थ जीवन चुना
तुम्हें चुनकर मैंने अपने बच्चों का सुखी भविष्य चुना।

- डॉ. रणजीत

नरू से निनामा होते .....

(पृष्ठ तीन का शेष)

इस नरु ने 108 विवाह किए पर संतान एक भी नहीं हुई तब बांसवाड़ा जिले के धारणा गांव (वर्तमान में यह गांव प्रतापगढ़ जिला बनने से उसमें है) की आम पर एक सौ आठ पालने बांधे गए। इस आम वृक्ष के नीचे लोकदेवता आमल्या बावसी का स्थान आज भी है। संतान नहीं होने की स्थिति में देवता को मनौती बोली गई और पालने बंधवाये गये फलस्वरूप नरु के एक सौ आठ बालक हुए। आगे जाकर आदिवासियों की एक सौ आठ खांपें अथवा गोत्रें चलीं।

संतान नहीं होने की स्थिति में लोकदेवी-देवता के थानक (देवरे) पर आज भी पालना बांधा जाता है जिससे देवता प्रसन्न होकर नि:संतानों को संतान देते हैं। बांसवाड़ा में ये आदिवासी सब ओर फैल गए। पूरे राजस्थान में यदि आदिवासियों की गणना की जाय तो आज भी सर्वाधिक आदिवासी बांसवाड़ा जिले में मिलेंगे।

नरु से निनामा निकले। बांसवाड़ा जिले में यदि आदिवासियों की सभी खांपों का अध्ययन किया जाय तो सर्वाधिक संख्या निनामा आदिवासियों की मिलेंगी। कई गांव ऐसे मिलेंगे जिनमें निनामा आदिवासियों का बाहुल्य पाया जाता है। आदिवासी लोकसंगीत की अध्येता मालिनी काले ने मुझे बताया कि जोगी लोग नरु राजा से सम्बन्धित कथा-गाथा का गान भी करते हैं।

राजा नरु से चली 108 गोत्रें इस प्रकार हैं-

(1) अंगारी (2) अमरात (3) अहारी, अहारा, अहार, अहीर (4)उठेड़ (5) उदावत (6) कटारा (7) कपाया (8) कलउवा, कालासुआ (9)कसीटा (10) कूरिया (11) कोटेड़ (12) खरवड़ (13)खराड़ी (14) खूंखड़ (15)खोखारिया (16) गमेती (17) गराया, गरासिया (18) गेलोत, गेहलोत (19) गोगरा (20) गोदा (21) गोरणा (22) घुघरा (23) घोड़ा (24) चदाणा (25) चवाण, चव्हाण (26) चरपोटा (27) जोगात, जगावत (28) जोसियाला (29) झड़पा (30) डगासा (31) डागर, डामरत (32) डैंडोर, डींडोर, डोडियार (33) डामर, डामरत (34) डामोर (35) डूंगरी (36) तंवर (37) तावड़, तामड़, (38) तावेड़ (39) तेजोत (40) दमणात (41) दरांगी (42) दाणा, दायणा (43) दामा, दायमा (44)धलोविया (45) धांगी (46) धोरणा (47) नटारा (48) ननामा, निनामा (49) ननोत (50) नीबो (51) पड़ियार (52) पटेला (53) परमार (54) पांडेर (55) पांडोट (56) पारगी (57) पालिपी (58) बंडोडा (59) बड़ (60) बरंडा (61) बरगट (62) बरोड़, बरड़ (63) बाणिया (64) बामणा, बामणिया, बूमड़िया (65) बूज, बोज (66) भगोरा (67) भदावत (68) भणात (69) भाकलिया (70) भाटी (71) मंडोत (72) मईड़ा (73) मकवाना (74) मतात, मनात (75) मदुड़ा (76) मनात (77) मसार (78) महेड़िया (79) माल, मालर (80) मालीवाल (81) मावी, मारी, मोरी (82) मोगिया (83) रंगोत (84) रतनात (85) राठौड़ (86) राणा, राणोत, रेड़ोत (87) रोत (88) रेलावत (89) रेवाल (90) रावत (91) लउर (92) लट्ट (93) वगाणा (94) वडेरा (95) वेणोत (96) वरहात (97) वराड़ा (98) वाहिया (99) सदाणा (100) सरपोटा (101) सांगिया (102) सारल (103) सीवणा, सीवाणा (104) हड़ात, हड़ाल (105) हरमर, हरमोर (106)हिंडोर (107) हीराता हीरोत, हुरात (108) होंता।

गोत्र को आदिवासी अटक बोलते हैं। इन गोत्रों का उल्लेख मैंने सन् 1993 में प्रकाशित उदयपुर के आदिवासी नामक अपनी पुस्तक में भी किया है।

आदिवासी जीवन जगत की खदान बहुत गहरी है। उस गहराई में मैं झांक पाया। बहुत गहरा झांकने का भय सबको विदित है। निर्जन स्थानों में भटकना तो दूर, फटकना भी मुश्किल है। बहुत सूक्ष्म देखने के लिए हम अपनी आंख को छोटी कर देते हैं या फिर हथेली की सुरंग बनाकर देखने की चेष्टा करते हैं।

मैंने कुछ ऐसी ही चेष्टा लोकदेवताओं की शरण में, उनके सेवकों, पुजारियों का सान्निध्य पाकर भी की है। आधुनिकता और अति आधुनिकता के चक्कर में हम विज्ञान की ताकत से तो प्रभावित होते हैं परन्तु परंपरानिष्ठ ज्ञान-विज्ञान और उसकी शक्तियों पर विश्वास नहीं अथवा बहुत कम करते हैं इसलिए भी उस ज्ञान से हम विमुख होते जा रहे हैं।

SAI TIRUPATI UNIVERSITY

(Established by the Rajasthan State Legislative Assembly under Sec. 2(f) of UGC Act 1956.)

PACIFIC INSTITUTE OF MEDICAL SCIENCES
MBBS | MD/MS | M.Sc. (Non Clinical)
Contact: 9587890081, 9587890082

VENKTESHWAR COLLEGE OF NURSING
B.Sc. | M.Sc.
Contact: 9587890082

VENKATESHWAR INSTITUTE OF PHARMACY
B. Pharm. | D. Pharm.
Contact: 9587890082

VENKTESHWAR COLLEGE OF PHYSIOTHERAPY
BPT | MPT
Contact: 9587890082

VENKTESHWAR SCHOOL OF NURSING
GNM
Contact: 9587890082

VENKTESHWAR INSTITUTE OF MANAGEMENT STUDIES
MBA
[Hospital Administration & Healthcare Management]
Contact: 8005787638, 9587890082

VENKTESHWAR INSTITUTE OF FASHION TECHNOLOGY & MASS COMMUNICATION
Degree | Diploma
Fashion Design | Textile Design | Interior Design
Fine Arts | Jewellery Design |Event Management
Graphic Design
Contact: 9672978017, 9672978038

RESEARCH PROGRAM (Ph.D)
Medical Sciences & Nursing
Contact: 9358883194, 9587890082

VENKTESHWAR COLLEGE OF NURSING

CAMPUS PLACEMENT OF B.Sc. NURSING STUDENTS

in INDIRA IVF

Package : ₹ 2.4 Lacs per annum

AJAY RAY
Location - Kolkata

AQSA MALIK
Location - Hisar

ARPANA DEVI
Location - Delhi

ARZOO RAYAZ
Location - Delhi

DAMINI DEVI
Location - Udaipur

DHEERAJ KUMAR
Location - Udaipur

ERA D . CHRIASITAN
Location - Ahmedabad

GULAM D. PATHAN
Location - Silliguri

MASOOD AKBAR
Location - Chennai

MEHNAZ AKHTER
Location - Hisar

MUZAFFER ANAYET
Location - Jammu

NEERU DEVI
Location - Chandigarh

NEETU DEVI
Location - Chandigarh

NEHA CHOUHAN
Location - Pune

NISHA SAGAR
Location - Udaipur

SAIMA KOUSER
Location - Hisar

SUSHIL KOTWAL
Location - Delhi

TANMAY PATEL
Location - Pune

UDAY SINGH BAIRWA
Location - Hyderabad

UMAIR SHAFIQ
Location - Asansol

VISHAL SEVAK
Location - Indore

YAWER NAZIR
Location - Ballari

ZEESHAN FEROZ
Location - Jammu

ZOHRA BANOO
Location - Ludhiana

PACIFIC INSTITUTE OF MEDICAL SCIENCES

Ambua Road Umarda, Udaipur (Raj.) 313015 Phone: 0294-3510000, Mob. 8696440666

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।